हिंदी आत्मकथा के विविध आयाम

प्रधान संपादक

डॉ. विद्यावती जी. राजपूत

संपादक

प्रा. धन्यकुमार जिनपाल बिराजदार

हिंदी आत्मकथा के विविध आयाम

(Collective Essays Presented at International Seminar on 'Aatmakatha')

- प्रधान संपादक - डॉ. विद्यावती जी. राजपूत
  संपादक - प्रा. धन्यकुमार जिनपाल बिराजदार

- **प्रकाशक:**
  विझक्राफ्ट पब्लिकेशन्स ॲन्ड डिस्ट्रीब्युशन प्रा. लिमिटेड,
  १२९/४९८, वसंत विहार, मुरारजी पेठ, जुना पुणे नाका, सोलापूर- ४१३००१
  भ्रमणध्वनी - ०९६३७३३५५५१, ०९६६५९५००९७
  ई-मेल - wizcraftpublication@gmail.com

- **मुद्रक:**
  पालवी प्रिंटर्स,
  १२९/४९८, वसंत विहार, मुरारजी पेठ, जुना पुणे नाका, सोलापूर-४१३००१

- **वर्ष : २०१६**

- **ISBN: ९७८-९३-८६०१३-१४-९**

- **रुपये: ३५० /-**

सभी हक सुरक्षित (इस पुस्तक में प्रकाशित संशोधित लेख एवं सभी विचारों से संपादक मंडल सहमत होंगे ही ऐसा नहीं।)

प्रस्तुत पुस्तक में प्रकाशित आलेख, विभिन्न विचार, आदि लेखक के हैं। अतः संपादक, संपादक मंडल, मुद्रक तथा प्रकाशक इन विचारों से सहमत होंगे ही ऐसा नहीं।

४२. अन्या से अनन्या में प्रभा का अस्मिताबोध १८२
- डॉ. बी. एल. गुंडूर, प्रभावती श. शाखापुरे

४३. दलित आत्मकथाओं में सामाजिक एवं शैक्षिक संघर्ष १८७
- डॉ. एल. पी. लमाणी

४४. डॉ. प्रभा खेतान की आत्मकथा अन्या से अनन्या में स्त्री-संघर्ष १९१
- अनिता उगरगोल

४५. हिंदी आत्मकथा में परिवारीक संघर्ष १९५
- डॉ. आर के मेत्राणी

४६. डॉ. अब्दुल कलाम जी का जीवन संघर्ष १९८
- डॉ. महांतेश. आर. अंची

४७. गांधीजी की आत्मकथा में सामाजिक संघर्ष २०१
- डॉ. अनीता एम. बेलगांकर

४८. धोखा, दर्द और समानंतर दुनिया की बात एक कहानी २०३
यह भी के साथ
- डॉ. ओगलता शाक्य कलबुरगी

४९. आत्मकथा में दलित संघर्ष २०९
- डॉ. अमृत एल. बाळुवाले

५०. भारतीय दलित स्त्री की रचनात्मक चेतना में आत्मकथा का महत्व २१२
- डॉ. दयानंद शास्त्री

५१. दोहरा अभिशाप में नारी संघर्ष २१६
- डॉ. मिनाक्षी बी. पाटील

५२. हिंदी आत्मकथा में दलित एवं नारी संघर्ष की गाथा २२१
- बिष्णुलाल कुमाल (प्रजापति)

५३. आत्मकथा : मन्नू भंडारी की कलम से २३०
- डा. मधु भारद्धाज

५४. आत्मकथा का विभिन्न लेखकों द्वारा विवेचन २३४
- डॉ. चंचल शर्मा

५५. सत्य के प्रयोग : नील का दाग २३९
- डॉ. रमेश कुमार स्वामी

५६. हिंदी आत्मकथा में नारी संघर्ष के विविध आयाम २४३
- डॉ. के. श्याम सुन्दर

५१

दोहरा अभिशाप में नारी संघर्ष

डॉ. मिनाक्षी बी. पाटील, बसवेश्वर कला और वाणिज्य महाविद्यालय, बसवन बागेवाडी

व्यक्ति का जन्म उसके वंश की बात नहीं है। उसके पैदा होती ही जाति, और धर्म उससे जुड जाते हैं। इनसे उसकी मुक्ति नहीं है। ऐसी स्थिति में वह व्यक्ति अगर स्त्री हो तो उसकी मुक्ति की बात करना और भी कठिन हो जाता है। अगर स्त्री दलित परिवार में जन्म लेती है तो उसकी स्थिति कैसे रहेगी यह अंदाजा भी नहीं लगाया जा सकता। कहा जाता है कि समाज में एक सामान्य स्त्री की जीवन दलित से भी बदतर होता है और अगर वह स्त्री दलित हो तो उसकी दशा क्या हो सकती है?

कौसल्या बैसंत्री भी एक ऐसी ही दलित स्त्री है। जिन्होंने शोषण तथा उपेक्षा को झेला है। "एक दलित स्त्री को दोहरे अभिशाप से गुजरना पडता है एक उसका स्त्री होना और दूसरा उसका दलित होना"१ कौसल्या बैसंत्री की लिखी आत्मकथा 'दोहरा अभिशाप' में इसका साफ चित्र मिलता है। कौसल्या बैसंत्री की यह आत्मकथा हिंदी दलित साहित्य की पहली महिला आत्मकथा मानी जाती है। स्वयं लेखिका आत्मकथा की भूमिका में लिखती हैं, 'मातृभाषा मराठी होते हुए हिंदी में लिखने का प्रयोजन क्यों' ? क्योंकि हिंदी में दलित महिलाओं के आत्मकथा साहित्य का अभाव है जिसकी शुरुआत में मैं भी हिस्सा होना चाहती हूँ।२ वैसे तो आत्मकथा अनुभावों का दस्तावेज है। जिसमें संघर्षशील जीवन में भोगा गया यथार्थ, गरीबी, तिरस्कार आदि वेदना का अंकन मिलता है। वैसे भी दलित वेदना दलित साहित्य की जन्म दात्री है और आत्मकथा में लेखका अपने जीवन की एक-एक पन्नों को खोलकर रखती है। इस संदर्भ में लेखिका उल्लेख करती हैं कि "अस्पृश्य समाज में पैदा होने

साहित्य और सिनेमा

Literature & Cinema

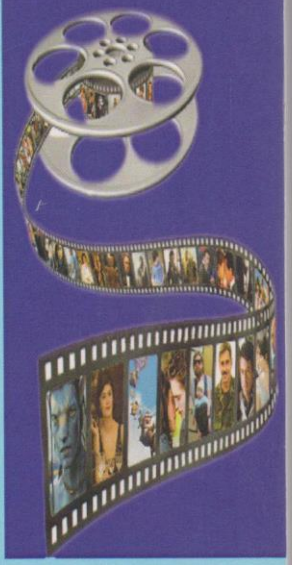

सम्पादक (हिंदी)
डॉ. शीला भास्कर
Editor (Hindi)
Dr. Sheela Bhaskar

सम्पादक (अंग्रेजी):
श्रीमती स्वपना के. जाधव
Editor (English)
Smt. Swapna K. Jadhav

साहित्य और सिनेमा

(20 जनवरी 2018 को आयोजित
एक दिवासीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में सग्रहीत आलेख)

ISBN : 978-93-5291-910-9

प्रधान संपादक	:	डॉ. शीला भास्कर (हिंदी)
कॉपी राइट	:	संपादकाधीन
संस्करण	:	प्रथम, 2018
शब्द सज्जा एवं मुद्रक	:	भास्कर आर्ट मीडिया, हुब्बल्ली
मूल्य	:	₹ 500.00

सभी हक सुरक्षित है (इस पुस्तक में प्रकाशित संशोधित लेख एवं सभी विचारों से संपादक मंडल, सहमत होंगें ही ऐसा नहीं है।)

प्रस्तुत पुस्तक में प्रकाशित आलेख, विभिन्न विचार, आदि लेखक के हैं।
अतः संपादक, संपादक मंडल, मुद्रक इसके लिए जिम्मेदार नहीं है।

81. हिंदी फिल्मों में मजदूरों के स्थितिगति 256
• श्रीमती एम. एन. होम्बाली
82. हिन्दी सिनेमा में नारी : विविध रूप 257
• जय प्रकाश
83. हिंदी सिनेमा में स्त्री विमर्श 260
• गीतांजली डी. सुखसार
84. असग़र वजाहत के कहानी साहित्य में सिनेमा की झलक 263
• राघवेंद्र वी मिस्किन
85. हिंदी सिनेमा में स्त्री विमर्श 266
• परवीनबानु, सैयदसाब, कलकेरी
86. साहित्य और सिनेमा एक चिंतन 268
• डॉ शबिना एम. हावेरिपेट
87. साहित्य समाज और सिनेमा 269
• डॉ. मीनाक्षी. बी. पाटील
88. हिन्दी फिल्मी गीतों में पर्यावरण : बारिश 272
• डॉ. राजशेखर. उ . जाधव
89. हिन्दी साहित्य और ससनेमा – एक चिंतन 275
• शमीला परवीन
90. हिन्दी फ़िल्मी गीतों में पर्यावरण 279
• डॉ. श्रीमती अभया जी. देवदास.
91 भारतीय सिनेमा और हिन्दी 285
• प्रो. इरण्ण जे.
92 हिन्दी साहित्य और सिनेमा – एक चिंतन 287
• शिल्पा टी.
93 साहित्यकार राही मासूम रजा का हिन्दी फिल्मों में योगदान 291
• डॉ. एल. पी. लमाणी

87

साहित्य समाज और सिनेमा

डॉ. मीनाक्षी. बी. पाटील
हिन्दी विभाग
बसवेश्वर कला और वाणिज्य महाविद्यालय, बसवन बागेवाड़ी
जिला– विजयपुर

साहित्य और समाज का अन्योन्याश्रित संबंध है। समाज का संपूर्ण प्रतिबिंब हमें तत्कालीन साहित्य में दिखाई देता है। समाज में व्याप्त आशा–निराश, सुख?दुःख, उत्साह?हताशा जैसे भाव साहित्य को प्रभावित करते हैं और इन्हीं से साहित्य के स्वरुप का निर्धारण होता है। दुनिया के प्रत्येक देश में चाहे वह विकसित हो, विकासशील हो या अविकसित हो वहाँ साहित्य अवश्य ही रचा जाता है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल की मान्यता है कि प्रत्येक देश का साहित्य वहाँ की जनता की चित्तवृत्ति का संचित प्रतिबिंब है। 1 साहित्य समाज को प्रतिबिंबित करता है।

साहित्य में व्यक्ति और समाज को प्रभावित करने की अपार क्षमता होती है। रवीन्द्रनाथ ठाकुर के शब्दों में "साहित्य" शब्द से मिलने के भाव का बोध होता है। वह केवल भाव–भाव का, भाषा–भाषा का, ग्रंथ–ग्रंथ का मिलन नहीं, अपितु मानव के साथ मानव का, अतीत के साथ वर्तमान का, दूर के साथ निकट का अत्यन्त अंतरंग मिलन भी है। जो कि साहित्य के अतिरिक्त किसी अन्य विधा में मिलना सम्भव नहीं है।[2] साहित्यकार समाज का ही एक अंग होता है। समाज में रहकर वह चिन्तन–मनन करता है। वह समाज की भावनाओं को साहित्य के माध्यम से अभिव्यक्त करता है।

जब बात साहित्य, समाज और सिनेमा की हो तो यह कहना अनुचित न होगा कि साहित्य समाज का दर्पण है और साहित्य तथा सिनेमा दोनों ही ऐसे माध्यम हैं जिसमें समाज को बदलने की क्षमता सबसे अधिक होती है। कहना अतिशयोक्ति न होगी कि सिनेमा साहित्य से अधिक प्रभावशाली और सामान्य जनता तक पहुँचने का सरल माध्यम है। सिनेमा आधुनिक युग में मनोरंजन का सबसे लोकप्रिय साधन भी बन गया है। आलें रॉबग्रिए का कहना है कि "सिनेमा – भावुकता और प्रतिकात्मता से रहित शुद्ध कला कृति है।"[3] हमारा अधिकांश साहित्य या तो वास्तविक जीवनकाल का एक संक्षिप्त संस्करण होने का प्रयत्न है या फिर किसी साहित्यिक कृति की हू–ब–हू अनुकृति होने का प्रयत्न। सिनेमा में विभिन्न नाट्य एवं ललित कलाओं का सम्मिश्रण है। सिनेमा ने मनुष्य के समाज और उसके वातावरण को परिवर्तित कर दिया है। यह वैचारिक क्रांति का एक सशक्त माध्यम बनकर उभरा है। आधुनिक जीवन शैली से तनाव ग्रस्त मानव मन को तनाव से मुक्त कराने के लिए कई आधुनिक साधन हैं, उनमें सिनेमा सबसे लोकप्रिय है।

अमेरिका के वैज्ञानिक टामस एलवा एडिसन ने सन् 1894 ई. में सिनेमा का आविष्कार किया। उस समय केवल मूक फिल्में ही बनती थीं। इसके कई वर्षों के पश्चात डाडस्टे नामक वैज्ञानिक ने फिल्मों में ध्वनि देने में सफलता प्राप्त की। अमेरिका से इंग्लैंड होता हुआ सिनेमा ने भारत में प्रवेश किया। फ्रांस के लुमियेर ब्रदर्स ने सन् 1896 ई. में मुंबई के एक होटेल में चित्रों को चलाकर दिखाया। इससे प्रेरणा ग्रहण कर "दादासाहब धुंडीराज गोविन्द फालके" ने भारतीय सिनेमा की नींव रखी। उन्होंने पौराणिक कथाओं को आधार बनाकर फिल्में बनायी।

ISBN : 978-93-83813-31-5

भारतीय साहित्य का अंतरराष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य

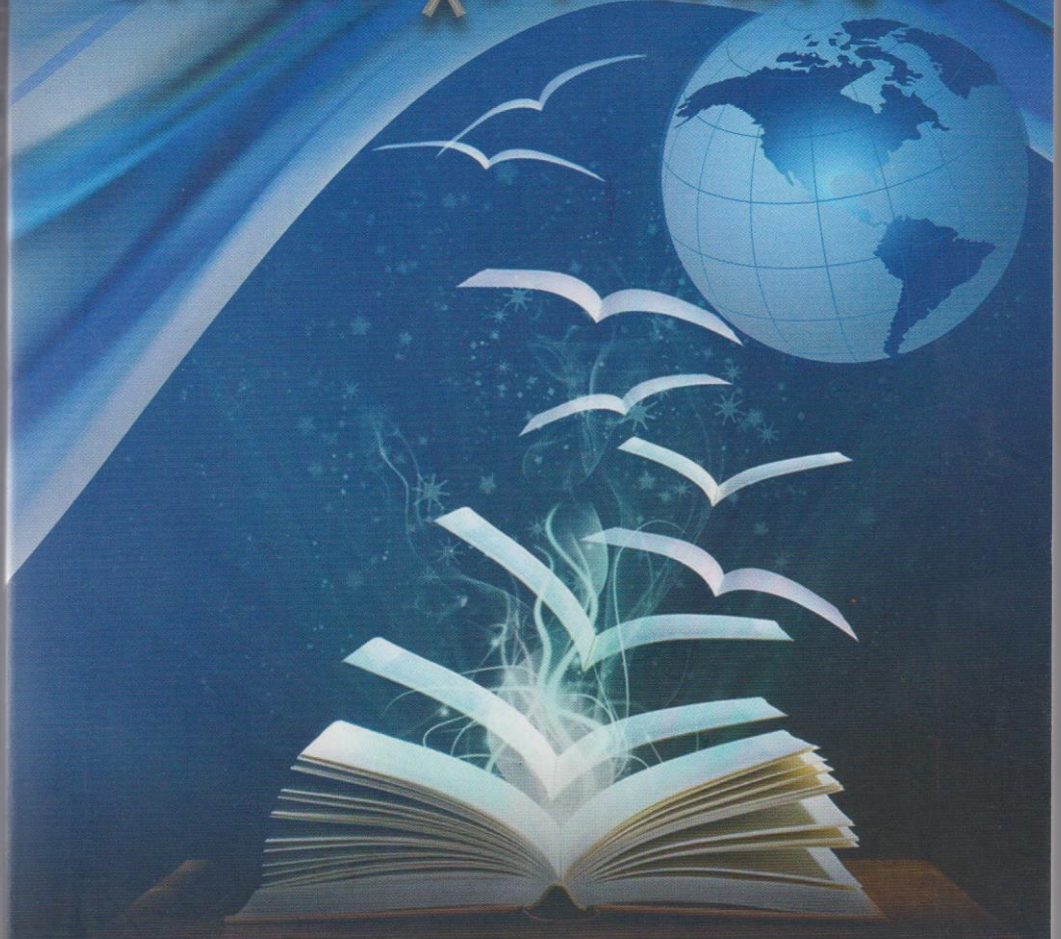

प्रधान संपादक

• डॉ. एस. टी. मेरवाडे • डॉ. एस. एस. तेरदाल

सह संपादक

• डॉ. एस. जे. पवार • डॉ. एस. जे. जहागीरदार

BHARATIYA SAHITYA KA ANTARARASHTRIYA PARIPREKSHYA :

ISBN 978-93-83813-31-5

Publisher : Soumya Prakashan
Kabeer Kunj, Mahabaleshawar Colony
Vijayapur – 586 103

© Publisher

First Edition : 2018
Copies : 1000
Pages : xii + 448 = 460
Price : **Rs. 300/-**
Book Size : Demy 1/8
Paper Used : 70 G.S.M. N. S. Maplitho

भारतीय साहित्य का अंतरराष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य

प्रधान संपादक : डॉ. एस. टी. मेरवाडे, डॉ. एस. एस. तेरदाल
सह संपादक : डॉ. एस. जे. पवार, डॉ. एस. जे. जहागीरदार

ISBN 978-93-83813-31-5

प्रकाशन : सौम्य प्रकाशन
'कंबीर कुंज', महाबलेश्वर कॉलनी,
विजयपुर - 586 103 (कर्नाटक)

प्रथम मुद्रण : 2018

© प्रकाशक

प्रति : 1000
पृष्ट : xii + 448 = 460
मूल्य : **रु. 300/-**
बुक साईज : डेमी 1/8
पेपर : 70 जी.एस.एम. एन. एस. म्यापलिथो
मुद्रक :
त्वरित मुद्रण आफसेट प्रिन्टर्स
विट्ठल मंदिर रोड, गदग - 582 101
Email : chaitanyaoffset@gmail.com
Mobile : 8884495331, 9448223602

58. हिन्दी साहित्य में (आर्थिक रूप से विपन्न) नारी: एक अध्ययन
• डॉ. के. वी. कृष्णमोहन 288

59. बाल साहित्य और उसकी विधाएँ
• डॉ. अनीता एम. बेलगाँवकर 293

60. नवोदय तथा छायावादी काव्य का आदान - प्रदान
• डॉ. मालतेश स. बसम्मनवर 296

61. निम्नवर्ग के बच्चों में शिक्षण की समस्याएँ और समाधान
साहित्य अमृत पत्रिका में प्रकाशित कहानियों के संदर्भ में
• सोनाली तेरदाले 302

62. हिन्दी साहित्य में स्त्री विमर्श
• सुनिता रा. हुन्नरगी 305

63. 'सुनामी सडक' में चित्रित पर्यावरण विमर्श
• वर्षाराणी जबडे 310

64. नई सदी के हिंदी लेखिकाओं के उपन्यासों में अंकित
राजनीतिक मूल्य
• अमोल तुकाराम पाटील 315

65. मंजूर एहतेशाम के कहानियों में चित्रित अल्प संख्यक विमर्श
• फिरोज बालसिंग 319

66. हिंदी महिला काव्य में बदलता परिवेश
(स्त्री सशक्तिकरण के संदर्भ में)
• वीरेश बिसनल्लि 322

67. नरेश मेहता के काव्यों में आधुनिक बोध
• शिवराजकुमार कल्लूर 325

68. आदिवासी उपन्यास और भूमंडलीकरण
• शेख सादिक पाषा 332

69. सुशीला टाकभौरे की कविताओं में स्त्री चिंतन
• डॉ. मीनाक्षी बी. पाटील 334

सुशीला टाकभौरे की कविताओं में स्त्री चिंतन

• डॉ. मीनाक्षी बी. पाटील

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तात्राफलहः क्रियाः।।

कहा जाता हैं कि समाज में या जहाँ स्त्री जाति का आदर सम्मान होता है, उनकी आवश्यकतों, अपेक्षाओं, आकांक्षाओं की पूर्ती होती है, उस स्थान, समाज तथा परिवार पर देवतागण प्रसन्न रहते हैं। जहाँ स्त्रीयों का तिरस्कार किया जाता है, वहाँ देवताओं की कृपा नहीं रहती है और वहाँ संपन्न किये गये कार्य भी सफल नहीं होते हैं। अब प्रश्न यह उठता है कि समाज सदियों से स्त्री के प्रति आदर तथा सम्मान की बात करता आ रहा है तो 21 वीं सदी में 'स्त्री विमर्श' ने क्यों जन्म लिया? स्त्रीयों को अपने अधिकार की, स्वतंत्रता की लडाई क्यों लडनी पडी ? आज स्त्री हाशिए पर क्यों खडी है? स्त्री विमर्श के द्वारा स्त्रीयों को केन्द्र में लाने का प्रयास क्यों किया जा रहा है ? क्यों उसे संघर्ष करना पड़ रहा है आदि आदि। और इन सारे प्रश्नों का उत्तर एक ही हो सकता है 'स्त्री विश्व की सर्वप्रथम दलित' है। स्त्री संघर्ष किसी एक देश की नहीं बल्की वह वैश्विक विचारधारा बनी है। परंतु प्रत्येक देश की स्त्रीयों का संघर्ष वहाँ के सामाजिक परिवेश पर निर्भर करता है। सामाजिक स्तर पर हो रहे इस संघर्ष को जब साहित्य में स्थान मिला तो वह स्त्री विमर्श के रूप में अलग से स्त्री साहित्य का रूप ग्रहण करता है। इक्कीसवीं सदी की नये साहित्यिक प्रकार ने खासकर स्त्रीयों को अपने खुले विचारों को प्रकट करने के लिए एक खुला मंच तैयार करके दिया है। इस मंच पर सदियों से चले आ रहे मौन को अभिव्यक्ति मिलने लगी है।

समकालीन भारतीय साहित्य : विविध विमर्श

विविध विधाओं के संदर्भ में

भाग -१

प्रधान संपादक

प्रो. सीताराम के. पवार

सह संपादक

प्रो. प्रभा भट्ट

डॉ. एल. पी. लमाणी

डॉ. शीला. चौगुले

डॉ. नीता दौलतकर

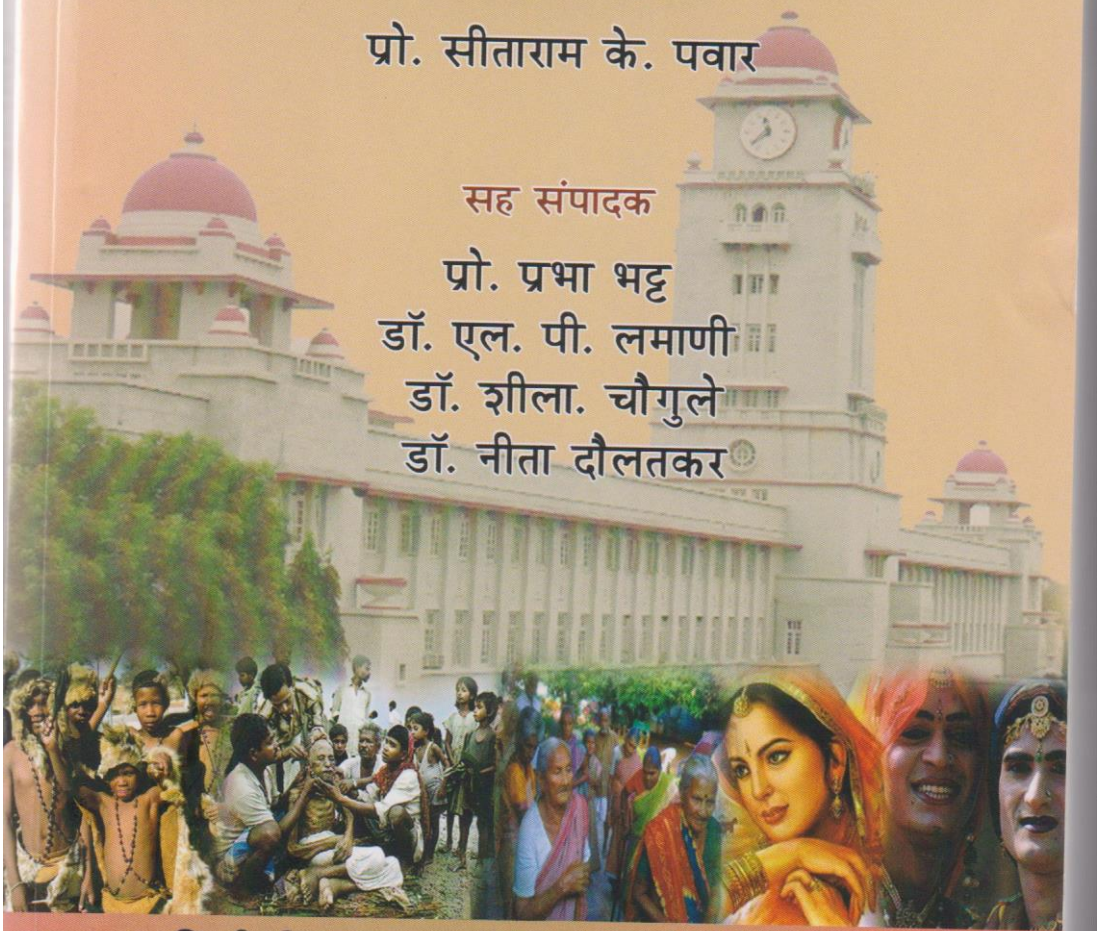

हिन्दी विभाग, कर्नाटक विश्वविद्यालय, धारवाड

समकालीन हिन्दी साहित्य : विविध विमर्श

(Collective Essays Presented at International Conference on
"Diverse Criticism in Contemporary Indian Literature)

प्रधान संपादक : प्रो. सीताराम के. पवार

© : प्रधान संपादक

प्रकाशक : अमन प्रकाशन कानपुर

मुद्रक : सरस्वति प्रिंटर्स, धारवाड

वर्ष : २०१८

पृष्ट : ६३१+१२

ISBN : **978-93-86604-74-3**

मूल्य : ३००

प्रतियाँ : ३००

सभी हक सुरक्षित है ।

प्रस्तुत पुस्तक में प्रकाशित आलेख, विभिन्न विचार, आदि लेखक के हैं । अतः संपादक, संपादक मंडल, मुद्रक तथा प्रकाशन इसके लिए जिम्मेदार नहीं है ।

168.	वृद्ध विमर्श		
169.	समकालीन हिंदी साहित्य : विविध विमर्श – दलित विमर्श	सुनिता रा. हुन्नरगी प्रो.शंकर मूर्ती. के.एन.	469 471
170.	आत्मकथात्मक उपन्यास दोहरा अभिशाप में चित्रित दलित जीवन का दर्दनाक यथार्थ	निशा मुरलिधरन	473
171.	विवेकी राय के उपन्यासों में अभिव्यक्त दलित समाज का यथार्थ	शिंगाडे सचिन सदाशिव	475
172.	समकालीन हिन्दी साहित्य किन्नर विमर्श	डॉ.चिलुका पुष्पलता	477
173.	परित्यक्त किन्नरों की कथा – व्याथा	डॉ. राजशेखर.उ.जाधव	479
174.	हिन्दी कहानियों में किन्नरों का स्वागत	डॉ. मीनाक्षि पाटिल	481
175.	अपना लिंग उन्हें चुनने की स्वतंत्रता दीजिए	डॉ. पवन कुमार	483
176.	समकालीन हिन्दी साहित्य में अल्पसंख्यक विमर्श	प्रो. एम.एस.हुलगुर	485
177.	स्त्री विमर्श: हिन्दी साहित्य के संदर्भ में	Dr. Mallikarjunayya G.M	487
178.	मैत्रेयी पुष्पा के साहित्य में स्त्री विमर्श	प्रा. रईसा मिझा	489
179.	स्त्री विमर्श ? एक अध्ययन	एम.आई. चिन्दी	491
180.	समकालीन हिंदी कहानियाँ और स्त्री विमर्श	शक्तिराज	493
181.	समकालीन हिन्दी साहित्य में स्त्री विमर्श	डॉ.मालती प्रकाश	495
182.	"महिला उपन्यास लेखन एवं स्त्री विमर्ष"	लेफ्टनंट डॉ.रविंद्र पाटील	497
183.	समाज के परित्यक्त किन्नर वर्ग की व्यथा कथा ।	डा. सुजाता पी. फातरपेखर	499
184.	समकालीन हिन्दी उपन्यासों में आदिवासी विमर्श	वी. गीता मालिनी	501
185.	इशपाल के उपन्इासों में स्त्री – विमर्श	वैशाली महादेव जाधव	503
186.	स्त्री – विमर्श	यविजयश्रि भि गुडी	505
187.	आधुनिक हिंदी उपन्यासों में नारी विमर्श	डा. उमा आर. हेगडे	507
188.	मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में नारी विमर्श	प्रो.हसनखाद्री.एम.	509
189.	स्त्री विमर्श: हिन्दी समकालीन उपन्यास साहित्य के संदर्भ में।	प्रतीक माली	511
190.	दलित साहित्य हिन्दी साहित्य में दलित विमर्श	आनंद नायक	513
191.	उषा प्रियम्वदा के उपन्यासों में नारी विमर्ष	डॉ. हिंदुराव रा. घरपणकर,	514
192.	समकालीन हिंदी कविताओं में स्त्री–विमर्ष	सौ. सुगंधा हिंदुराव घरपणकर	517
193.	समकालीन कथा साहित्य में स्त्री विमर्श के मुद्द	रजनी शाह	520
194.	भारतीय पाश्चात्य स्त्री विमर्श ? एक अध्ययन		522
195.	लिम्बाले की कहानियों में अभिव्यक्त सामाजिक परिवेष (दलित परिप्रेक्ष्य में)	लक्ष्मी प्रसाद कर्श	524

हिन्दी कहानियों में किन्नरों का स्वागत

डॉ. मीनाक्षि पाटिल

दुनिया के प्रत्येक देश में है। किन्नरों के अतीत और उद्भव से संबंधित अनेक अंतर्कथाएँ प्रचलित हैं, जो हमें पुराणों में देखने के लिए मिलते हैं। परंतु पुराणों के किन्नर और आधुनिक युग के किन्नरों की स्थिति में बहुत अंतर है। इनसे संबंधित सर्वाधिक प्रचलित पौराणिक कथा रामायण का एक प्रसंग है, जो भगवान श्री राम के वनागमन से संबंधित है। कहा जाता है कि जब पिता कि आज्ञा का पालन करते हुए राम लक्ष्मण और सीता सहित चित्रकूट आ गए तो उन्हें मनाकर वापस अयोध्या ले जाने के लिए भरत अयोध्यावासियों के साथ चित्रकूट आये थे। लेकिन प्रभु श्री राम ने भरत तथा अयोध्यावासियों की अनुनय विनय को अस्वीकार कर सभी नर-नारियों को वापस जाने की आज्ञा देते हैं परंतु उन्होंने किन्नरों के लिए कुछ नहीं कहा, जबकि वे उन्हें मनाने के लिए वहाँ आये हुए थे। कहा जाता है कि उनके लिए प्रभु श्री राम ने कोई स्पष्ट आदेश न देने के कारण उन किन्नरों ने 14 वर्षों तक वहीं रुककर प्रभु श्री राम की वापसी की प्रतीक्षा करने का निर्णय लिया। प्रभु श्री राम जब वनवास पूर्ण कर वापस अयोध्या लौट रहे थे तो उन्होंने इन किन्नरों को चित्रकूट में अपनी प्रतीक्षा करते हुए पाया। प्रभु श्री राम ने उनके वहाँ रुकने का कारण पूछा तो किन्नरों ने बताया कि जब हम भरत के साथ यहाँ आपको मनाने के लिए आये थे तो आपने कहा था-

जथा जोगु करि विनय प्रनाम, बिदा किए सब सानुज रामा ।
नारि पुरुष लघु मध्य बड़ेरे, सब सनमानि कृपानिधि फेरो ॥"1

कहा जाता है कि प्रभु श्री राम किन्नरों की इस निश्छल और निःस्वार्थ भावना से अत्यधिक प्रसन्न हुए और उन्होंने प्रसन्नता से किन्नरों को वरदान दिया कि कलियुग में तुम लोग राज करोगे। तुम जिन्हें अपना आशीर्वाद दोगे, उसका कभी अनिष्ट नहीं होगा। इसलिए जब कभी किसी के घर में खुशियाँ मनायी जाती हैं तो उन खुशियों में शामिल होने के लिए किन्नर भी वहाँ उपस्थित होते हैं। खुशियों के गीत गा कर दुआँए दे जाते हैं। ऐसे शुभ अवसर पर ग्रहस्थ भी उन्हें सहर्ष स्वागत करते हैं और नेग भी देते हैं। महाभारत में भी इनका उल्लेख मिलता है। शिखंडी तथा बृहनल्ला के रुप में। राजा - महाराजाओं ने भी किन्नरों को महत्वपूर्ण स्थान दिया था। इनकी नियुक्ति रानियों की पहरेदारी के लिए होती थी। मुस्लिम शासन में हरमें की सुरक्षा के लिए हिजड़े ख्वाजासरा के नाम से सुरक्षाकर्मी के रुप में तैनात किए जाते थे। अतीत का द्वार खटकते हैं

ICHSTE-2017:HUMANITIES, SCIENCE, TECHNOLOGY & ENVIRONMENT

ISBN:978-81-930214-5-3

ANJUMAN

ARTS, SCIENCE, COMMERCE COLLEGE & PG STUDIES IN ENGLISH, VIJAYAPUR

Re-Accredited with "A" Grade by NAAC In 3rd CYCLE

AND

DECCAN ENVIRONMENTAL RESEARCH ORGANIZATION, VIJAYAPUR

21	جگت گرو ابراهیم عادل شاه ثانی : ایک علم پرور شہنشاہ۔ **Abubakar Momin**	75
22	Jadid Urdu Gazal **Dr. Syed Aleemullah Hussaini**	77
23	Policy And Politics Of Sub-Categorization Of Scheduled Caste Reservation In India: A Social Justice Perspective, **Shri. Chidanand S. Anur**	82
24	Empowering, Equitable Education and Cultural Responsibility of Teachers, **Dr. Sameena Sindagikar**	90
25	Higher Education In India: Seizing The Opportunity, **Dr. Jahida Makandar**	95
26	Causes, Consequences and Remedies of Domestic Violence, **Dr. Atik-ur-raheman S. M.**	106
27	Carbon Footprint, **Tayyaba Killedar**	112
28	Humanity, **Shri.F.R.Sarwad, Nahida Anjum Bagli, Jahanara Bagali**	123
29	Psychological Adjustment of Gifted Students, **Miss. Asma .M. Jambagi**	126
30	The Problems Of Women Labourers In Unorganised Sector **Mrs. Vijayalaxmi B. Hipparagi, Dr.Veerendrakumar. N.**	128
31	Gandhi as a votary of Humanist, **Shri. Prabhuling S.Tolanur**	134
32	The Impact of Social Environment on the Personality, **Dr. Tejeshwari S.Koregol**	137
33	Re-Designing The Curriculum In Higher Education: Need Of The Hour In Tl Clobal Context, **Dr. U. K. Kulkarni**	140
34	Global Warming And It's Effects, **Shri R.B.Sirasangi**	145
35	Energy Conservation: An Effective Way Of Energy Utilization, **Geeta G. Kandakur, Dr. Vijaya B. Korishetty**	148
36	Local Environmental Health **Gangamma V. Madiwalar, Dr. M. P. Baligar**	151
37	A Study Of Teacher Effectiveness Of Women Student Teachers, **Mrs. Savita S Patil**	155
38	Problems & Challenges Of Women Empowerment: A Study, **Miss. Firdous Begum M. Bagali, Miss. Nehasadaf I. Malli**	159
39	A Study Of Emotional Competence Of Kannada And English Medium University Students, **Surekha K.Bandi**	162
40	Development Of Enveronment Using Technology, **Dr. Ishtak Ahmed.H.Hawaldar**	165
41	Role Of Education In The Devlopment Of Humanities, **Dr.Ishtak Ahmed.H.Hawaldar**	169

 ISBN: 978-81-930214-5-3

31

Gandhi as a votary of Humanist

Shri Prabhuling S.Tolanur, Dept.of English, B.L.D.E.A's, New Arts & Commerce College, Tikota. (Vijayapur-dist)

Gandhiji possessed a unique personality with its numerous facets. The world has not seen the like of him in the past and perhaps it will not see another Gandhi in a thousand years to come. He was seeker after truth and to him. Truth was God and he made experiments with 'Truth throughout his life. He was deeply religious but he worshipped God primarily through the service of man and looked upon all human beings as but the manifestations of God himself. Loved all beings as he loved his own self. He subscribed to the teachings of Gita and saw all beings in him and saw himself in all human beings too and thus indentified himself with all beings. He loved all beings as he loved his own self. His humanism was the pivot of all the different aspects of his wonderful personality. His humanism meant his utter devotion to the human interests-welfare of the individual men and women of the human race. But in his eyes all human beings were potentially divine and the service of man was the service of God whom he called Daridra Narayan – the God of the also. His humanism thus widely differed form that particular type of humanism or religion of humanity of the neo-atheists who seek to explain the evolution of man without god as the source of his evolution and to do away with the worship of my divine or supernatural power as out-dated unscientific and unnecessary and who concentrate their efforts on serving mankind at large and not the individual men and women of human race we often come across the letter type of humanism in many modern thinkers. They conceive humanism as something exclusive of the religious sentiments which emanate from a belief in existence of God. These people altogether dispense with the worship of God and confine their efforts to the service of humanity alone. Strangely enough they loose sight of the source of the humanity and they have yet to realize that man is, by nature, potentially divine and the life divine is the summum bonum is the evolution of man is the highest stage man yet to reach the highest service to man will be our sincere endeavour for drawing out the divine nature in man. To gain this end, we have to be in communion with God and to worship him as the source of all our noble virtues.

Then the humanism in most modern thinkers is found to be of the abstract form to speak. To wax eloquent over the over the humanism is one thing and to worship humanism is the concrete form-to-serve individual human beings in flesh and blood in their sorrows is quite another thing. To serve man in his distress, in his poverty in illness and in his sorrows to wipe out the tears from his eyes constitutes the true type of humanism, Gandhiji was the votary of this genuine type of humanism. To translate one's noblest thoughts into action is the highest achievement of man, Gandhiji greatness rests on his achievements.

As morality has to be natured in the soil religion so humanism also is rooted in the deep faith in God. Humanism bereft of its life-giving source of living faith in God, withers like a flower plant which has its roots taken off from the soil. Gandhiji's humanism was a corollary of his realization of the presence of God in all human beings in concrete shape and was ultimately based on the bed rock of Advita philosophy. He wrote 'my creed is service of God and therefore of humanity in another context he said I believe in Advita I believe in the

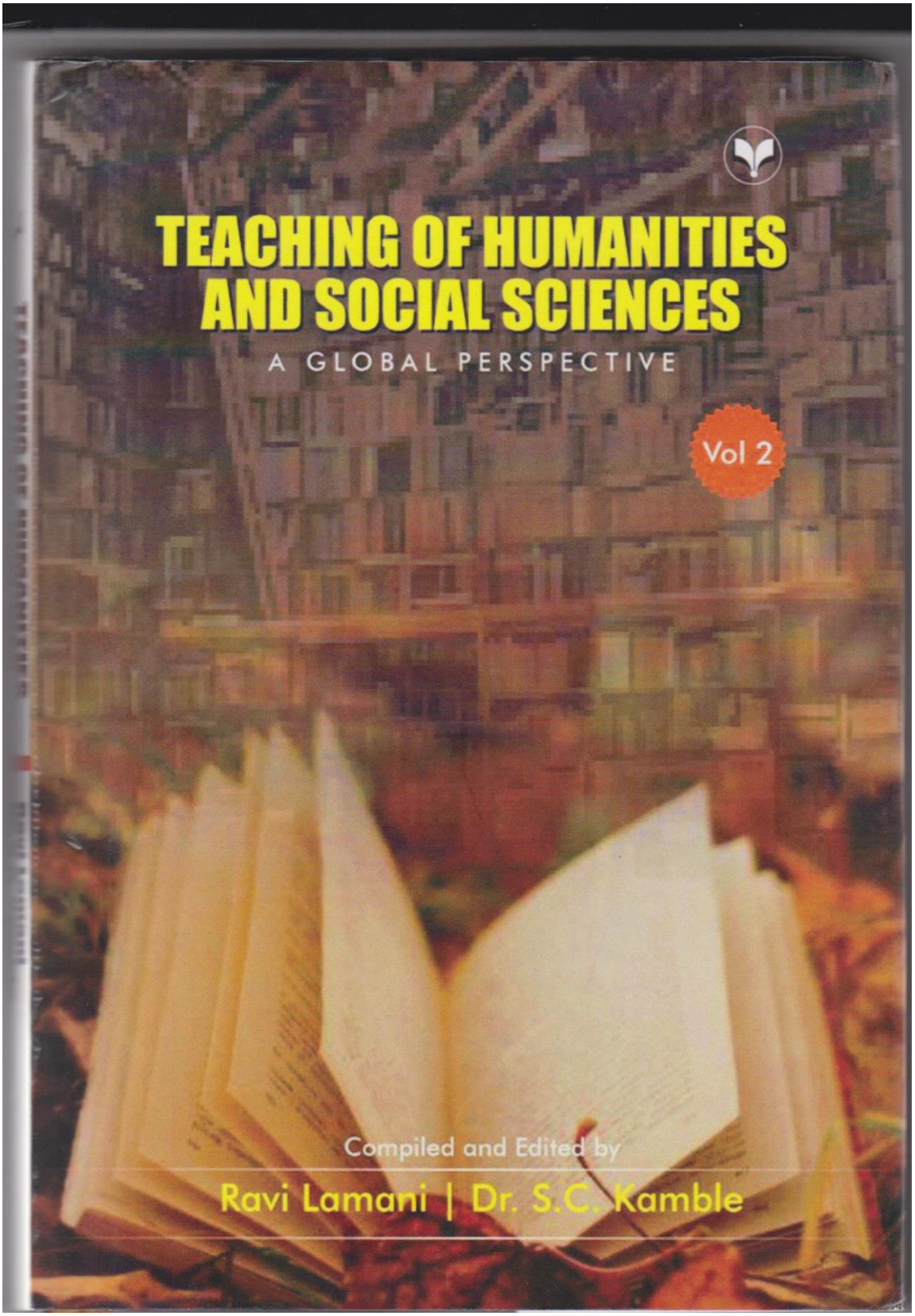
TEACHING OF HUMANITIES AND SOCIAL SCIENCES
A GLOBAL PERSPECTIVE
Vol 2
Compiled and Edited by
Ravi Lamani | Dr. S.C. Kamble

TEACHING OF HUMANITIES AND SOCIAL SCIENCES
A GLOBAL PERSPECTIVE

Compiled and Edited by
Ravi Lamani
Dr. S.C. Kamble

Published by:

Registered Office:
Sunil Terrace, Block No.14, Near Central S.T. Bus Stand,
Latur-413512 (MS) India. Cell: 91-9422 467 462
e-mail: info@vishwabharati.in
www.vishwabharati.in

ISBN: 978-93-87966-06-2

Price: ₹ 799| $ 35

Copyright © G.P. Porwal Arts, Commerce and V.V. Salimath Science College, Sindgi
First Edition 2018

All rights reserved. No part of this publication may be reproduced, distributed or transmitted in any form or by any means, including photocopying, recording, or other electronic or mechanical methods, without the prior written permission of the Publisher and the Author, except in the case of brief quotations embodied in critical reviews and certain other non-commercial uses permitted by copyright law. All legal matters concerning the Publication/Publisher shall be settled under the jurisdiction of Latur (MS) Court only.

Cover Design Source: Images from Google and Internet
Printed, Typesetting, Cover Design by:
SAHITYANAND

16 ROLE OF WOMEN IN QUIT INDIA MOVEMENT-1942
Sri. S.P. Kokatanur
149

17 IMPACT OF SOCIAL NETWORKING ON SOCIETY
Dr. Shekhar Apparaya, Ms. Surekha A & Suresh Mule
158

18 ELT-TRENDS AND PROSPECTIVE OF ENGLISH POETRY FOR PRODUCTIVE LANGUAGE LEARNING AND TEACHING ACTIVITY
Prof. P. S. Tolanur
168

19 THE EFFECTS OF URBANIZATION, MODERNIZATION AND GLOBALIZATION ON INDIAN SOCIETY
Karibasappa G.
172

20 IMPACT OF GLOBALISATION ON INDIAN SOCIETY AND CULTURE
Rashmi.G.Vanshakrutamath & Vijaya.B.Korishetti
179

21 VOICE AND SUBJECTIVITY OF WOMEN IN BAMA'S SANGATI
Dr. S.B. Biradar & M.I. Biradar
188

22 GLOBALIZATION AND CHANGING VALUES IN INDIAN SOCIETY –IN THE LIGHT OF MANJUKAPUR'S CUSTODY
Ms. Roopavati S. Koregol
196

23 THE CONTRIBUTION OF WOMEN IN FREEDOM MOVEMENT AT STATE OF KARNATAKA
Prof. N. P. Koti
201

18

ELT-TRENDS AND PROSPECTIVE OF ENGLISH POETRY FOR PRODUCTIVE LANGUAGE LEARNING AND TEACHING ACTIVITY

Prof. P. S. Tolanur

Introduction:

In modern world we can see a change in relationship every where is it at home, in social life or at the work place. Life is a process in which change is inevitable, In keeping with the pace of changing times, The teacher also needs to change in fact the teacher has changed in India —form 'GURU' to instructor/ teacher to facilitator/advisor /counselor. The focus now is on teaching of English language rather than English literatures.

The traditional teaching materials the text books - can no longer be the only dependable sources. An English teacher has to be resourceful and creative in preparing appropriate teaching materials

Prof. P. S. Tolanur: Dept. of English, B.L.D.E.A.'s New Arts College, Tikota

EMPOWERMENT THROUGH GOOD GOVERNANCE IN INDIA : ISSUES & CHALLENGES

Editor

Dr.UddagattiVenkatesha

EMPOWERMENT THROUGH GOOD GOVERNANCE IN INDIA –ISSUES & CHALLENGES

Published by :

The Registrar,

Tumkur University, Vishwavidyanilaya Karyalaya,

B.H.Road, Tumakuru -572103, Karnataka, India

Copy Right :

The Registrar,

Tumkur University, VishwavidyanilayaKaryalaya, B.H.Road,

Tumakuru -572103, Karnataka, India

ISBN	:	**978-93-82694-34-2**
Pages	:	xi+400 =411
First Impression	:	120 copies
Paper	:	Maplitho 80 GSM
Price	:	300
Size	:	1/8 Demy

The views and opinions expressed in this book are the authors own and the facts are as reported by them which have been verified to the extent possible and the publishers are not in any way liable for the same.

Printed by :

M.G Enterprises & Printers

15th Cross, S.S. Puram, Tumakuru.

Karnataka State, India.

Mob : 9886520465

20.	CIVIL SOCIETY AND GOOD GOVERNANCE IN INDIA **Dr. B.GOPAL NAIK**	184
21.	AN OVERVIEW OF THE SUKANYA SAMRUDDHI YOJANA AND ITS EFFECTIVE UTILIZATION AMONG GIRL CHILD FAMILIES IN KARNATAKA STATE **SACHIN B S** **Dr. RAMESH B**	191
22.	EMPOWERMENT OF SCs & STs THROUGH GOOD GOVERNANCE IN INDIA- AN OVERVIEW ***DR.M.VEERA PRASAD** ****DR.Y.TAMANNA** *****PROF.BASAVARAJ G**	200
23.	INITIATIVES AND IMPLEMENTATION OF E-GOVERNANCE PROGRAMMES IN KARNATAKA: AN OVER VIEW ***DR.VENKATAPPANAIK** ****DR.ANJANAYYA.BISTEE**	209
24.	LIBRARY AND GOOD GOVERNANCE **Dr. B. RAVIVENKAT**	216
25.	SOCIAL JUSTICE THROUGH GOOD GOVERNANCE IN INDIA **JYOTHILINGA V.**	223
26.	GOOD GOVERNANCE AND CIVIL SOCIETY IN CONTEMPORARY INDIA : AN OVER VIEW ***YOGISH.A.** ****RAVI.R.**	232
27.	GOOD GOVERNANCE IN INDIA: PROSPECTS & CHALLENGES IN POVERTY ALLEVIATION ***DR.SURAPPANAIK** ****DR.M. MADHUMATHI**	247
28.	"POVERTY ALLEVIATION THROUGH GOOD GOVERNANCE" **MALLAVVA TALAVAR** **DR. GOURI MANIKMANASA**	260
29.	POVERTY ALLEVIATION THROUGH GOOD GOVERNANCE IN INDIA **NAGESHA M DR.CHALUVARAJU**	272

EMPOWERMENT OF SCs & STs THROUGH GOOD GOVERNANCE IN INDIA- AN OVERVIEW

***Dr.M.Veera Prasad**
Guest Faculty,
Dept. of Studies & Research
in Public Administration
*Tumkur University Tumakuru-3
****Dr.Y.Tamanna**
Assistant Professor
Dept. of Political Science, BLDEA'S,
SBS Arts & Commerce,
College for Women, Vijayapura-1
*****Prof.Basavaraj G**
Professor, Dept. of Studies &
Research in Political Science
Tumkur University, Tumakuru-2

INTRODUCTION

Good Governance is the key to a Nation's progress. Our government is committed to providing a transparent and accountable administration which works for the betterment and welfare of the common citizen.

"Citizen-First" is our mantra, our motto and our guiding principle [PRIME MINISTER OF INDIA SHRI NARENDRA MODI]. It has been my dream to bring government closer to our citizens, so that they become active participants in the governance process. During the last seven months, our government has been consistently working towards this goal. mygov.in and interact with PM seek to make this engagement meaningful. The unprecedented response which these initiatives have evoked, places a large responsibility upon us, and I assure you, my countrymen that we will not let you down.

The important step for Good Governance is simplification of procedures and processes in the Government so

Empowering Rural India Through Decentralization

Editor
Somashekhar C.L
Asst. Professor
Dos in Public Administration
University of Mysore
Mysuru.

Editor
Prof. Dayananda Mane
Chairman
Dos in Public Administration
University of Mysore
Mysuru.

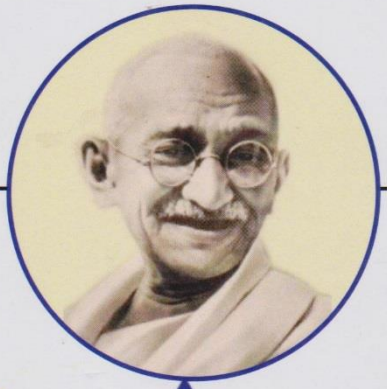

EMPOWERING RURAL INDIA THROUGH DECENTRALIZATION

First edition -2018

ISBN No - 978-93-87584-30-3

Price – 500

Pages – 377+ 8

Copies - 100

Cover Page Design - Smruddi Graphics
Vinayaka Nagara, Mysuru

Print – Tara Print, Mysuru.

Published By
Gayathri Enterprises
#285/F-6, Uttaradhi mut Road,
Fort Mohalla, Near JSS Hospital, Mysuru-570004

17	Political Women Empowerment Through Panchayatraj Institutions In Karnataka- **Vijayakumar.B**	149-155
18	Empowering Women Through Panchayati Raj Institutions: Opportunities And Challenges - **Sowmya.R, Shrungar K S**	156-165
19	Role Of Panchayat Raj Institutions In Women's Empowerment- **Dr. Latha.M**	166-170
20	Rural Women Empowerment Through Panchayati Raj - **Vinutha. M**	171-174
21	Empowerment Of Tribal Women Through Education - **Dr. Venkatesha. H. S.**	175-180
22	Women Empowerment Through Co-Operatives - **Naveen Kumar R** **Dr. S. Mahendrakumar**	181-191
23	Panchayati Raj: An Esclator To Women Empowerment **Author: Hamza Khan** **Co-Author: Saimaafreen**	192-199
24	Empowerment Of Women In Panchayath Raj: A Study On Mysuru District **Pavitha T M**	200-207
25	Rural Health Policy Development Through Pri's - **Anugraha K Kurian**	208-211
26	Rural Health Development Through Panchayat Raj - **Shobha. M**	212-217
27	Nationa Rural Health Mission And Reinvention Of Indian System Of Medicine: An Analysis Of Programme Performance. - **Rajesh Bhika Patil.**	218-225
28	Public Health In Karnataka: The Role Of Panchayat Institutions **Dr. Channaveere Gowda B.N**	226-235
29	We, The People: Constructing Liminal Spaces Of Indian Democracy **Prasanta Kumar Sahu**	236-244
30	Future Of Panchayati Raj: The S.K. Model- **Prof. S.K. Kataria**	245-249
31	Analysis Of Socio - Economic Status Of Women Entrepreneurs In Bagalakote District Of Karnataka State - A Case Study **Dr. V S Kulkarni, Dr. H M Mujawar, Prof. Srinivas A T**	250-256
32	Preventing And Rehabilitating Bonded labour In Rural India **Prakasha D.C.**	257-266
33	Challenges To Indian Grass Root Democracy In The Light Of Panchayat Raj Institutions - **Keerthiraj**	267-273
34	Panchayati Raj System In India, Advantages And Their Problems **Author - P. Jayapal Reddy** **Co- Author- Bhukya Ravi Naik**	274-285
35	The Role Performance Of The Women Presidents In Gram Panchayats"– A Case Study Of The Kodagu District. - **Girish.H.R.**	286-300

Analysis of Socio - Economic Status of Women Entrepreneurs in Bagalakote district of Karnataka State - A case study

Dr. V S Kulkarni,
Dept of Statistics, B.L.D.E.A's
Degree College, Jamakhandi – 587301
(Dist: Bagalakote)

Dr. H M Mujawar,
Dept of Statistics,
A.S.P College of Commerce, Vijayapur

Prof. Srinivas A T,
Dept of Statistics, Basaweshwar Arts
and Commerce College,
Basavan bagewadi Dist: Vijayapur

Abstract

Socio-economic status is often measured as a combination of education, income and occupation. It is commonly conceptualized as the social standing or class of an individuals or group. Women are often more responsible for raising children. This fact is the one of the many reasons that the socio-economic standing of women is of great importance to the well being of future operation. In this paper an attempt is made to analyze the socio-economic status of rural and urban women enterprenuers based on various demographic factors viz; Age, Education, Marital Status, Family Type, Income . . . etc, of Bagalakot district of Karnataka state, India. The association between different demographic factors and area were identified using chi-square test.

Key words: Chi-Square test, Women empowerment, Socioeconomic Status, Women entrepreneurs, Work Place, area of working

1. Introduction

The present study is aimed to analyze the socioeconomic profile of women entrepreneurs in Bagalakote district of Karnataka state. Chi-square test is a most powerful test used to examine the significance of relationship between two or more attributes. In this paper socio economic status of rural and urban women entrepreneurs were identified basing on various demographic factors. Chi-square test is used to test the association between different